सीएसआईआर-सीरी, पिलानी में 66 वें गणतंत्र दिवस समारोह का भव्य आयोजन

सीएसआईआर - केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी), पिलानी में राष्ट्र का 66 वाँ गणतंत्र दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। संस्थान के मुख्य लॉन में आयोजित समारोह में संस्थान के निदेशक डॉ चंद्रशेखर, संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिकों व अन्य सहकर्मियों के साथ सीरी विद्या मंदिर के प्रधानाचार्य, शिक्षकगण व विद्यार्थी तथा पिलानी के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

ध्वजारोहण करते हुए
डॉ चंद्रशेखर, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी

कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के निदेशक डॉ चंद्रशेखर द्वारा राष्ट्र ध्वज फहराने के साथ हुआ। ध्वजारोहण के बाद उपस्थित जनसमूह ने सीरी विद्या मंदिर के विद्यार्थियों द्वारा बैंड पर बजाई गई सुंदर धुन पर राष्ट्र गान गाया।

ध्वजारोहण के उपरांत राष्ट्र गान का दृश्य

संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिकों, प्रशासनिक अधिकारी व अन्य अधिकारियों, सीरी विद्या मंदिर के प्रधानाचार्य ने डॉ चंद्रशेखर का समारोह स्थल पर पहुँचने पर स्वागत किया। इसके बाद परंपरानुसार निदेशक महोदय को 'गॉर्ड ऑफ ऑनर' दिया गया।

अपने स्वतंत्रता दिवस उद्बोधन में संस्थान के **निदेशक डॉ चंद्रशेखर** ने उपस्थित जनसमुदाय तथा देशवासियों को इस पावन दिन की बधाई देते हुए देश के अमर शहीदों के बलिदान को याद करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि यह देश हम सब का है और हमें इसकी प्रगति व विकास में अपना यथासंभव योगदान देते हुए हिस्सेदार बनना होगा।

'गार्ड ऑफ ऑनर' लेते हुए डॉ चंद्रशेखर, निदेशक
साथ में हैं सीरी विद्या मंदिर के प्राचार्य श्री एस के शर्मा

गणतंत्र दिवस उद्बोधन देते हुए
डॉ चंद्रशेखर, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी

अपने उद्बोधन में संस्थान के **निदेशक डॉ चंद्रशेखर** ने उपस्थित जनसमुदाय तथा देशवासियों को 66 वें गणतंत्र दिवस की बधाई दी और विद्यार्थियों की सुंदर प्रस्तुतियों के लिए सभी छात्र-छात्राओं व उनके शिक्षकों व प्रधानाचार्य की सराहना की। अपने देश के नीति-नियंताओं की दूरदृष्टि की प्रशंसा करते हुए देते हुए उन्होंने उत्कृष्ट संविधान देश के नागरिकों को देने के लिए संविधान निर्माताओं के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने देश की संस्कृति व सभ्यता की चर्चा करते हुए कहा कि हमारी संस्कृति तो विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से है परंतु एक गणतंत्र के रूप में हमारा देश अभी अपेक्षाकृत युवा है। गणतंत्र के रूप में अभी हमें मात्र 65 वर्ष ही हुए हैं और अभी हमें बहुत लंबा सफर तय करना है। विभिन्न देशों में आधुनिकता बनाम परंपरा के बीच चल रहे संघर्ष पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि हमारे देश की संस्कृति व सभ्यता की यह विशेषता है कि यह समन्वयवादी है। हम दूसरी संस्कृतियों का आदर करते हैं। अपने संविधान की ही तरह हमने दूसरी सभ्यताओं की श्रेष्ठ बातों को खुले दिल से अपनाया है और कभी भी रूढिवादिता को मुखर नहीं होने दिया। उन्होंने कहा कि यह देश हम सब का है और हमें इसकी प्रगति व विकास में अपना यथासंभव योगदान देते हुए हिस्सेदार बनना होगा। उन्होंने कहा कि अब वह दिन

दूर नहीं कि हमारा यह महान देश प्रत्येक क्षेत्र में विकास के नए कीर्तिमान स्थापित करते हुए विश्व के अग्रणी देशों की पंक्ति में खड़ा होगा।

हमारा संविधान अत्यंत आधुनिक दस्तावेज है जिसमें हमारे संविधान निर्माताओं ने नए विचारों के साथ अपने देश की भौगोलिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को महत्व देते हुए अत्यंत गहन विचार-विमर्श व अन्य देशों के संविधानों का विस्तृत अध्ययन कर अपने लिए श्रेष्ठ संविधान की रचना की। डॉ चंद्रशेखर ने बताया कि हमारा नेतृत्व जहाँ अपनी जड़ों से जुड़ा था वहीं उसने खुले दिमाग से नए विचारों को भी स्वीकार किया। इसी कारण हमारे नीति-नियंताओं ने हमें सर्वश्रेष्ठ संविधान दिया।

आधुनिकता और विकास की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि आधुनिकता एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है। कोई भी देश रातों-रात आधुनिक नहीं हो जाता, यह एक सतत प्रक्रिया है जिसमें उसके नागरिकों का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहता है। हमारा देश ऐसा ही देश है जिसने अपनी परंपराओं और संस्कृतियों को संजो कर रखते हुए भी आधुनिकता को अपनाया है। उन्होंने कहा कि मुझे गर्व है कि हमारा देश ऐसा ही एक देश है। आज जबकि अनेक देश अपनी रूढिवादिता के चलते विश्व में चल रहे नए विचारों के प्रति आँखें मूँदकर आधुनिकता से संघर्ष कर रहे हैं। इसी कारण आज ऐसे देश आतंकवाद व अलगाववाद जैसी समस्या से जूझ रहे हैं।

स्कूली छात्रों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हम सभी भाग्यशाली हैं कि हमें इस धरती में जन्म लिया जहाँ हर नागरिक को समान अधिकार प्राप्त हैं और यह समानता जन्म से नहीं अपितु योग्यता के आधार पर प्राप्त है। इस अवसर पर उन्होंने अधिकारों व कर्तव्यों में संतुलन बनाए रखने पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि हमारे देश में जितनी विविधता है वैसी किसी भी दूसरे देश में नहीं है। परंतु हमारी संस्कृति ने हमें एक दूसरे का आदर करते हुए परस्पर मिलजुल कर रहना सिखाया है। उन्होंने बताया कि अनेकता में एकता हमारे देश की उल्लेखनीय विशेषता है।

कार्यक्रम के दौरान रंगारंग प्रस्तुति देते हुए सीरी विद्या मंदिर के विद्यार्थी

इससे पूर्व संस्थान के प्रांगण में आयोजित समारोह में सीरी विद्या मंदिर के विद्यार्थियों ने भव्य झाँकियों, समूह नृत्य, विभिन्न योग मुद्राओं, डंबल, पीटी, मार्शल आर्ट आदि प्रस्तुतियों का जीवंत प्रदर्शन किया। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय के विभिन्न सदनों के विद्यार्थियों व एनसीसी दल ने मार्च पास्ट (परेड) प्रस्तुत किया। अंत में बैंड दल ने सुंदर बैंड प्रस्तुति दी। परेड तथा बैंड की सलामी संस्थान के निदेशक डॉ चंद्रशेखर ने ली। उपस्थित जनसमुदाय ने तालियों की गड़गड़ाहट से सभी छात्र-छात्राओं का उत्साहवर्द्धन किया। परेड व अन्य प्रस्तुतियों के लिए मंच संचालन विद्यालय के छात्रों छात्राओं ने किया।

परेड की सलामी लेते हुए निदेशक, सीएसआईआर-सीरी

समारोह के अंत में निदेशक महोदय ने रंग-बिरंगे गुब्बारे आकाश में छोड़े तथा विद्यालय के बच्चों को टाफियाँ बाँटी। इस अवसर पर सभी उपस्थित लोगों को मिष्टान्न वितरण किया गया।

रंगबिरंगे गुब्बारे छोड़ कर शांति का पैगाम देते हुए संस्थान के निदेशक डॉ चंद्रशेखर

25 जनवरी को गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर निदेशक महोदय के नेतृत्व में **संध्या फेरी** का भी आयोजन किया गया जिसमें संस्थान सहकर्मियों, प्रशिक्षार्थी-छात्रों व कॉलोनी वासियों ने कॉलोनी परिसर में पदयात्रा करते हुए देश भक्ति गीत गाए।

इस प्रकार संस्थान में राष्ट्र का 66वाँ गणतंत्र दिवस समारोह धूमधाम से आयोजित किया गया।